

Original Article

आधुनिक भारत (स्वतंत्रता संग्राम संघर्ष विचारधारा और प्रभाव)

कमल किशोर

असिस्टेंट प्रोफेसर (श्री वर्धमान पीजी कन्या महाविद्यालय, ब्यावर)

Email: kgahlot36@gmail.com

Manuscript ID:

सारांश

JRD -2025-170519

ISSN: 2230-9578

Volume 17

Issue 51

Pp. 118-125

May 2025

Submitted: 03 Apr. 2025

Revised: 12 Apr. 2025

Accepted: 24 May. 2025

Published: 31 May. 2025

भारतीय इतिहास अत्यंत समृद्ध है। एक महत्वपूर्ण घटना जिसने देश की स्वतंत्रता में प्रमुख भूमिका निभाई, वह था भारत का राष्ट्रीय आंदोलन। राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत 1947 में एक दिन में नहीं हुई थी। यह एक ऐसा प्रक्रिया थी, जिसे फलदायक होने में कई वर्षों लगे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का भारत के इतिहास में विशेष महत्व है। इस लेख में आधुनिक भारत (स्वतंत्रता संग्राम, विचारधारा और प्रभाव) पर विभिन्न साहित्यिक अध्ययनों की समीक्षा की गई है। निष्कर्ष में यह पाया गया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक बहुआयामी आंदोलन था, जो विभिन्न विचारधाराओं, नेताओं और क्षेत्रीय प्रभावों से प्रभावित था। महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहीं क्रांतिकारी और वैकल्पिक दृष्टिकोणों जैसे दलित-बहुजन एवं वर्ग आधारित आलोचनाएं स्वतंत्रता के बाद सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता के अधूरे वादों को उजागर करती हैं। यह समीक्षा राष्ट्रीय आंदोलन की जटिलता को दर्शाती है, जिसमें इसके सफलताएँ और सीमाएँ दोनों नज़र आती हैं। इन बहुपरतीय संघर्षों और विरासतों को समझना भारत के लोकतांत्रिक सफर का पुनर्मूल्यांकन करने और आधुनिक भारत में असमानता, बहिष्कार तथा सामाजिक न्याय के वर्तमान मुद्दों को सुलझाने के लिए आवश्यक है।

कीवर्ड: भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, आधुनिक भारत, स्वतंत्रता संग्राम की विचारधारा और प्रभाव, भारतीय राष्ट्रीयता।

परिचय

भारत का स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटिश शासन से लड़ाई में देश के क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। यह प्रवृत्ति उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में शुरू हुई और बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों तक जारी रही [1]। 1857 की भारतीय विद्रोह ने इस आंदोलन को प्रेरणा दी, साथ ही अन्य देशों में राष्ट्रीयता के उदय और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य की कमजोरी की जनता की धारणा ने भी इसे बल दिया। आतंकवाद और रक्तपात इस क्रांतिकारी आंदोलन की विशेषताएँ थीं। इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को हिंसात्मक तरीके से उखाड़ फेंकना था। इस आंदोलन के भीतर कई समूह थे, जिनके अपने-अपने विचार और रणनीतियाँ थीं। कुछ समूह, जैसे अनुशीलन समिति और जुगांतर, ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या पर केंद्रित थे [2]। वहीं, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे अन्य समूह, ब्रिटिश सरकार को हिंसात्मक क्रांति के माध्यम से गिराने का प्रयास करते थे [3]।

क्रांतिकारी आंदोलन की कई सफलताएँ भी रही हैं। 1907 में मदन लाल दींगरा के नेतृत्व में एक समूह ने लंदन में ब्रिटिश अधिकारी सर कर्जन विली की हत्या की। 1915 में रास बिहारी बोस के नेतृत्व में एक समूह ने वाइसरॉय चार्ल्स हार्डिंग की हत्या का प्रयास किया।



Quick Response Code:



Website:

<https://jrdrvb.org/>

DOI: [10.5281/zenodo.15709412](https://doi.org/10.5281/zenodo.15709412)



Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the [Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International](https://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/) Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

कमल किशोर, असिस्टेंट प्रोफेसर (श्री वर्धमान पीजी कन्या महाविद्यालय, ब्यावर) **How to cite this article:**

किशोर, कमल. (2025). आधुनिक भारत (स्वतंत्रता संग्राम संघर्ष विचारधारा और प्रभाव). *Journal of Research & Development*, 17(5), 118–125. <https://doi.org/10.5281/zenodo.15709412>

और 1929 में भगत सिंह और सुखदेव थापर के नेतृत्व में विद्रोहियों ने दिल्ली की केंद्रीय विधान सभा में बम विस्फोट किया [4]। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में यह क्रांतिकारी आंदोलन एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की कठिनाइयों को उजागर किया और अगली पीढ़ी को संघर्ष जारी रखने के लिए प्रेरित किया [5]।

स्वतंत्रता संग्राम

महात्मा गांधी, जो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी थे, स्वतंत्रता के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को संगठित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। लेकिन इसी समय, अन्य छोटे राजनीतिक दल और समूह भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे [6]। ये राजनीतिक दल और समूह न केवल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा को आकार देते और पुनः आकार देते रहे, बल्कि समाज को एक विशिष्ट तरीके से सोचने और कार्य करने के लिए भी प्रभावित किया [7]। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो, औपनिवेशिक शासकों ने भारत पर केवल एक युद्ध या एक ही अवसर पर विजय प्राप्त नहीं की, बल्कि उन्होंने इसे अवसरवादी तरीके से किया। इसके अलावा, उन्होंने शासन या कानूनों की समानता स्थापित नहीं की, बल्कि शासकीय विविधता रखी, जो शोषण के लिए सुविधाजनक थी [8]। इसलिए, आंदोलन की गति और चेतना का स्तर क्षेत्रीय दृष्टिकोण से भिन्न था। फिर भी, ये घटनाएँ स्वतंत्रता-उपरांत भारतीय समाज पर प्रभाव डालती हैं। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की विरासतों का वर्तमान राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव समझने के लिए, हम इन विरासतों को दो व्यापक श्रेणियों में बाँटते हैं [9]। पहली श्रेणी में वे विरासतें हैं जो संविधानवाद के विकास में भूमिका निभा रही हैं और सरकार को वैधता प्रदान कर रही हैं। ये विरासतें मुख्य रूप से संघ और राज्य विधानसभाओं द्वारा विभिन्न अधिनियमों के माध्यम से लागू की गईं [10]। भारत का संविधान स्वयं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत का परिणाम है। दूसरी श्रेणी की विरासतें वे हैं जो राष्ट्रीय राजनीति और कभी-कभी क्षेत्रीय स्तर पर विकास को प्रभावित करती हैं। इन्हें भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की गैर-संस्थागत विरासत कहा जा सकता है। ये विरासतें भारतीय राजनीति में राजनीतिक विकास की धुरी हैं [11], [12]।

भारतीय राष्ट्रीयता का उदय

1885-1905 के बीच भारत में भारतीय राष्ट्रीयता का उदय हुआ। ब्रिटिश शासन भारत पर लंबे समय तक कायम रहा। उन्होंने भारतीयों को विभिन्न प्रकार के अत्याचारों का शिकार बनाया और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए उनकी संपत्तियों और धन-संपदा को छीन लिया। अपने खराब जीवन-स्तर के बावजूद, भारतीय सहनशील नहीं थे और अक्सर अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे [13]। 1885 से पहले, वे जो भी संघर्ष या विद्रोह करते थे, वे या तो पूरी तरह असफल होते या आंशिक रूप से विफल रहते। 1900 तक, भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना विकसित होने लगी थी, और वे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट हो गए थे। बाल गंगाधर तिलक और सुरेंद्रनाथ बनर्जी को राष्ट्रीयता के प्रवर्तक माना जाता है [14]।

19वीं सदी के उत्तरार्ध में ही भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास शुरू हुआ। इससे पहले ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष और लड़ाइयाँ तो हुईं, लेकिन वे स्थानीय क्षेत्र तक सीमित थीं और भारत के पूरे भूभाग को नहीं छू पाईं [15]। वास्तव में, उस समय कुछ विद्वानों का मानना था कि भारत कोई एक देश नहीं है। राजनीतिक एकता भले ही अतीत में रही हो, लेकिन वह स्थायी नहीं थी। इसके बावजूद, कई राजाओं के शासन के बावजूद सांस्कृतिक एकता की भावना हमेशा बनी रही, और विदेशी देशों ने उपमहाद्वीप को एक ही इकाई के रूप में इंडिया या हिंद के नाम से पहचाना [16], [17]।

19वीं सदी के अंत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना भारत में राष्ट्रवाद की शुरुआत थी। सेवानिवृत्त ब्रिटिश सिविल सेवक ए.ओ. ह्यूम और भारतीय नेताओं के एक समूह ने 1885 में INC की स्थापना की थी। इसका प्रमुख उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय हितों को आगे बढ़ाना और भारत की स्वतंत्रता को सुरक्षित करना था। प्रारंभ में, INC एक उदारवादी समूह था, जो संवैधानिक परिवर्तनों और धीमी राजनीतिक प्रगति को प्राथमिकता देता था [18]।

जब 19वीं सदी के अंत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना हुई, तो भारत में राष्ट्रवाद जड़ें जमाने लगा था। INC की स्थापना 1885 में भारतीय नेताओं के एक समूह और सेवानिवृत्त ब्रिटिश सिविल कर्मचारी ए.ओ. ह्यूम ने की थी [19]।

1919 के अमृतसर नरसंहार (जिसे जलियांवाला बाग हत्याकांड भी कहा जाता है) ने भारतीय राष्ट्रीय भावना को और प्रबल किया। इस घटना में ब्रिटिश सैनिकों ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी की थी। यह भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था और ब्रिटिश शासन के पतन की शुरुआत माना जाता है [20]।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के चरण

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक रूप से कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है, जिनमें प्रत्येक चरण की अपनी विशिष्ट रणनीतियाँ, आंदोलन और प्रमुख घटनाएँ रही हैं। इन चरणों को समझना भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के विकास की समग्र दृष्टि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रारंभिक प्रतिरोध (1757-1857)

प्रमुख घटनाएँ:

- प्लासी का युद्ध (1757): इस युद्ध ने भारत में ब्रिटिश राजनीतिक प्रभुत्व की शुरुआत को चिह्नित किया।
- सन्यासी और फकीर विद्रोह (1760-1800): बंगाल में ब्रिटिश शोषण के विरुद्ध प्रारंभिक विद्रोह।
- पोलिगर और पद्मासी विद्रोह (1799-1805): दक्षिण भारत में स्थानीय सरदारों द्वारा किया गया प्रतिरोध।
- वेल्लोर विद्रोह (1806): ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय सैनिकों द्वारा किया गया प्रारंभिक सशस्त्र विद्रोह।

विशेषताएँ:

इस चरण की विशेषता स्थानीय प्रतिरोध, विस्थापित शासकों द्वारा विद्रोह और ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ असंतोष के शुरुआती संकेत थे।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857-1858)

प्रमुख घटनाएँ:

- सिपाही विद्रोह (1857): जिसे अक्सर भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है। यह एक व्यापक लेकिन असंगठित विद्रोह था, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ हुआ।
- प्रमुख नेता: रानी लक्ष्मीबाई, बहादुर शाह ज़फ़र, तात्या टोपे, नाना साहिब आदि इस विद्रोह के प्रमुख नेतृत्वकर्ता थे।

विशेषताएँ:

यह चरण ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक सामूहिक, किंतु क्षेत्रीय रूप से बिखरा हुआ विद्रोह था। यह ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध पहला बड़े पैमाने पर किया गया प्रतिरोध था। इस विद्रोह के परिणामस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हुआ और भारत में ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष शासन आरंभ हुआ।

राष्ट्रवाद का उदय (1885-1905)

प्रमुख घटनाएँ:

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885): यह संगठन प्रारंभ में संवाद और सुधारों के लिए एक मंच के रूप में स्थापित हुआ था, जिसमें उदारवादी मांगों की जाती थीं।
- बंगाल विभाजन (1905): लॉर्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल का विभाजन बड़े पैमाने पर विरोध और स्वदेशी आंदोलन का कारण बना।

विशेषताएँ:

इस अवधि में भारतीय राष्ट्रवाद का उदय हुआ। शिक्षित मध्यम वर्ग ने राजनीतिक रूप से संगठित होना प्रारंभ किया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना हुई। स्वदेशी आंदोलन ने ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ संगठित, अहिंसात्मक विरोध की शुरुआत की। इस दौर ने भारत में जनचेतना और राजनीतिक सक्रियता को नई दिशा दी।

उग्र राष्ट्रवादी चरण (1905-1919)

प्रमुख घटनाएँ:

- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन: बंगाल विभाजन के विरोध में ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का व्यापक आंदोलन चला।
- क्रांतिकारी संगठनों का गठन: अनुशीलन समिति और गदर पार्टी जैसे संगठनों ने सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा।

- लखनऊ समझौता (1916): कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच एक ऐतिहासिक समझौता, जिसने विभिन्न समुदायों के बीच एकता को दर्शाया।

विशेषताएँ:

इस चरण में जहाँ एक ओर संवैधानिक सुधारों की मांगें चल रही थीं, वहीं दूसरी ओर उग्र और क्रांतिकारी मार्ग भी अपनाए जा रहे थे। यह दौर स्वशासन की स्पष्ट और प्रबल मांग का प्रतीक था।

गांधी युग (1919-1947)

प्रमुख घटनाएँ:

- असहयोग आंदोलन (1920-1922): महात्मा गांधी द्वारा प्रारंभ किया गया यह आंदोलन ब्रिटिश वस्तुओं, संस्थाओं और सेवाओं के बहिष्कार पर आधारित था।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934): दांडी यात्रा से आरंभ हुआ यह आंदोलन ब्रिटिश कानूनों की अवहेलना का प्रतीक था।
- भारत छोड़ो आंदोलन (1942): यह ब्रिटिश शासन समाप्त करने की माँग को लेकर एक व्यापक जनआंदोलन था, जिसमें भारी गिरफ्तारियाँ और हिंसा हुई।

विशेषताएँ:

गांधी युग में स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व महात्मा गांधी के अहिंसा और सविनय अवज्ञा के सिद्धांतों पर आधारित था। यह संघर्ष पहले से कहीं अधिक समावेशी बन गया, जिसमें महिलाओं, किसानों और ग्रामीण जनों की भागीदारी भी देखने को मिली।

अंतिम चरण (1945-1947)

मुख्य घटनाएँ:

- कैबिनेट मिशन योजना (1946): इस योजना का उद्देश्य एक अंतरिम सरकार का गठन करना और भारत का संविधान तैयार करना था, जिससे स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- माउंटबेटन योजना (1947): इस योजना के तहत भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान का निर्माण हुआ।
- स्वतंत्रता (1947): 15 अगस्त, 1947 को भारत को ब्रिटिश शासन से आज़ादी मिली, जिससे लगभग दो शताब्दियों का औपनिवेशिक शासन समाप्त हो गया।

विशेषताएँ:

यह चरण स्वतंत्रता की अंतिम बातचीत, भारत के विभाजन की त्रासदी और सत्ता के ब्रिटिश शासन से भारतीय हाथों में हस्तांतरण से चिह्नित था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव

- स्वतंत्रता संग्राम ने क्षेत्रीय, धार्मिक और सांस्कृतिक मतभेदों से परे राष्ट्रीय पहचान की भावना को बढ़ावा दिया। इसने स्वतंत्रता के साझा लक्ष्य के तहत विभिन्न समुदायों को एकजुट किया।
- अहिंसा की विरासत: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक विशेषता इसका अहिंसात्मक प्रतिरोध रहा, जिसने दुनिया भर के नागरिक अधिकार आंदोलनों को प्रेरित किया। महात्मा गांधी के इस मार्ग ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे वैश्विक नेताओं को भी दिशा दिखाई।
- संवैधानिक विकास: स्वतंत्रता संग्राम के परिणामस्वरूप भारत में एक लोकतांत्रिक ढांचे की नींव रखी गई। आंदोलन से जुड़े नेताओं ने भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूलभूत मूल्य समाहित किए गए हैं।

साहित्य समीक्षा

(अभिनव, 2023) [21] यह लेख भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की मूलभूत नींव में योगदान देने वाले विचारों और दर्शनशास्त्रों की समालोचनात्मक चर्चा करता है। यह आंदोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की लड़ाई नहीं था, बल्कि इसमें जनता की शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं का भी गहरा महत्व था। यह आंदोलन किसी एक विचार या एकल दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित नहीं था और

न ही भारत का कोई एकमात्र संस्थापक था जिसने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष किया हो। बल्कि, यह आंदोलन अनेक विचारों और सिद्धांतों का सम्मिलित प्रयास था। एकता, अहिंसा और स्वराज के सिद्धांतों ने मिलकर और जिम्मेदारी से राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता में योगदान दिया, भले ही साम्प्रदायिक चुनौतियाँ सामने आईं। राष्ट्रीय आंदोलनों के दौरान हुए विद्रोह और उभार यह संकेत देते हैं कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं से प्रेरित दर्शन ही आंदोलन के मूल थे।

(भट्टाचार्य और जाट, 2023) [22] यह शोधपत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में गांधीवादी राजनीतिक सिद्धांतों, विशेषकर अहिंसा के सिद्धांत, पर बल देता है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि महात्मा गांधी का संत-सदृश व्यक्तित्व और उनका राजनीतिक सक्रियता किस प्रकार भारत की स्वतंत्रता का कारण बनी। गांधीजी की राजनीतिक नैतिकता जैसे कि अहिंसा और सत्याग्रह पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण से विचार किया गया है, जिससे पारंपरिक सशस्त्र क्रांतियों और गांधीजी के शांतिपूर्ण आंदोलन के बीच अंतर को समझा जा सके। भारत का औपनिवेशिक विरोध अनेक आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक कारणों से प्रेरित था, और यह स्वतंत्रता प्राप्ति की विभिन्न विधियों को दर्शाता है। गांधीजी ने वर्गीय विभाजनों से परे जाकर जनसहभागिता को प्रोत्साहित किया। इसलिए, पूर्व-स्वतंत्र भारत में गांधीजी का लोकतंत्र और औपनिवेशिक विरोध का नेतृत्व उदारवादी-लोकतांत्रिक सिद्धांत के अंतर्गत एक-दूसरे से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं।

(गोयल, 2022) [23] 1857 का संग्राम भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह संघर्ष विश्वभर के इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों के बीच गंभीर बहस का विषय बना हुआ है। यद्यपि इस घटना को 150 से अधिक वर्ष हो चुके हैं, फिर भी यह युद्ध इतिहासकारों की रुचि का केंद्र बना हुआ है। इस संघर्ष के कारण, घटनाएँ, ब्रिटिशों का समर्थन करने वाले और उनके विरुद्ध लड़ने वाले व्यक्तित्व, तथा इसके परिणाम और प्रभाव, सभी इस अध्ययन का भाग हैं। परिणामों की दृष्टि से अनेक विद्वानों का मानना है कि यह युद्ध उन लोगों के लिए विफल रहा जिन्होंने इसकी शुरुआत की थी। हालांकि भारतीयों को इस संघर्ष से कुछ लाभ अवश्य हुए, फिर भी यह उपलब्धियाँ अक्सर युद्ध की विफलता की बहस के कारण दब जाती हैं। यह शोधकार्य इस युद्ध के माध्यम से भारत को प्राप्त उपलब्धियों और उनकी महत्ता पर केंद्रित है।

(भट्ट एवं कंदासामी, 2023) [4] इस अध्ययन में भारत में क्रांतिकारी प्रवृत्तियों का अन्वेषण करने का प्रयास किया गया है, जिसमें उनकी वैचारिक विविधता, ऐतिहासिक संदर्भ, प्रेरणाएँ, संगठनात्मक संरचनाएँ, प्रभाव और सामूहिक प्रतिरोध के रूपों को सम्मिलित किया गया है। यह शोध प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों तथा अभिलेखीय दस्तावेजों पर आधारित है, जिससे भारतीय क्रांतिकारी आंदोलनों की निरंतर परिवर्तित होती प्रकृति को समझने में सहायता मिलती है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों ने विविध वैचारिक ढाँचों को अपनाया, उनके उद्भव में सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, सहभागिता के पीछे विशेष प्रेरणाएँ थीं, संगठनों द्वारा विभिन्न रणनीतियाँ अपनाई गईं, जिनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा, और सामूहिक प्रतिरोध के अनेक रूपों का प्रयोग किया गया।

(पदवी, 2025) [24] गांधीजी का दर्शन सत्य (सत्य), अहिंसा और सविनय अवज्ञा पर आधारित था, जिसने न केवल लाखों भारतीयों को प्रेरित किया, बल्कि प्रतिरोध की प्रकृति को भी बदल दिया। यह शोधपत्र गांधी के वैचारिक ढाँचे के प्रभाव को असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे जन आंदोलनों पर विश्लेषित करता है। साथ ही यह गांधी के नेतृत्व शैली जिसमें सादगी, नैतिक अधिकार और समावेशी भागीदारी की विशेषता थी—का भी मूल्यांकन करता है, जिसने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अध्ययन गांधी की रणनीतियों के राजनीतिक एवं सामाजिक संदर्भों में प्रासंगिकता और प्रभाव का भी विश्लेषण करता है। अंततः, गांधी के वैचारिक आधार और नेतृत्व गुणों की समालोचनात्मक समीक्षा की गई है।

(सिंह, 2016) [11] पश्चिमी लोकतंत्रों की तुलना में भारत इस संदर्भ में अपेक्षाकृत नया है। मुगल साम्राज्य के क्रमिक पतन और भारत में ब्रिटिश शक्ति के उदय का आधार सैन्य बल था। संवैधानिक विकास की प्रक्रिया भी ब्रिटिश काल के दौरान ही प्रारंभ हुई। राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य केवल विदेशी सत्ता से मुक्ति प्राप्त करना नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के लिए एक वैकल्पिक प्रशासनिक ढाँचा तैयार करना भी था। यह शोधपत्र उन घटनाओं की समयानुसार विवेचना करता है जिन्होंने भारत में कानून निर्माण और उसके क्रियान्वयन की

प्रक्रिया को प्रभावित किया। यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की विरासतों का विश्लेषण करने का एक विनम्र प्रयास है, विशेषकर लोकतांत्रिक संस्थाओं और संविधानवाद के विकास के संदर्भ में।

(रानी, 2020) [25] भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन आधुनिक समाजों द्वारा देखे गए सबसे बड़े जन आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन मुख्यतः भारतीय जनता के हितों और ब्रिटिश उपनिवेशवाद के हितों के बीच मौलिक विरोधाभास का परिणाम था। ब्रिटिश उपनिवेशवाद को समाप्त करने के लिए ही यह आंदोलन अस्तित्व में आया। ब्रिटिश सत्ता ने समय-समय पर इस आंदोलन को दबाने का प्रयास किया, किंतु वे भारतीयों में निहित राष्ट्रवाद की भावना को समाप्त नहीं कर सके। अंततः भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। हालांकि, इस स्वतंत्रता के साथ-साथ विभाजन की अवधारणा भी सामने आई, जिसके परिणामस्वरूप भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र डोमिनियनों के रूप में अस्तित्व में आए। यह शोधपत्र भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा अपनाई गई उन रणनीतियों का विश्लेषण करता है, जिन्होंने भारत के विभाजन की दिशा में आंदोलन को प्रभावित किया।

(देसाई, 2021) [26] आधुनिक भारतीय राष्ट्रवादी चिंतन ने स्वतंत्रता, समानता, स्वतंत्रता का अधिकार, लोकतंत्र आदि जैसे राजनीतिक विचारों को लेकर गंभीर विचार किया है। हालांकि, राष्ट्रवादी विचारकों द्वारा परिकल्पित स्वतंत्रता की धारणा को आधुनिक भारतीय विचार की अन्य धाराओं से सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली। राष्ट्रवादी चिंतकों ने सार्वभौमिक मूल्यों की आकांक्षा की और साथ ही प्राचीन धार्मिक सिद्धांतों की पुनर्पुष्टि भी की। उनके इस प्रयास पर आधुनिक भारत के अन्य विचारकों ने सवाल उठाए और संदेह प्रकट किया। इस प्रकार स्वतंत्रता की विभिन्न व्याख्याएँ सामने आती हैं, जैसे- सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता। जाति, वर्ग और लिंग जैसी सामाजिक श्रेणियाँ, स्वतंत्रता की इन व्याख्याओं का आधार बनीं। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पंडिता रमाबाई, ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर, ई. एम. एस. नंबूदिरिपाद और अन्य विचारकों के विचार स्वतंत्रता की अवधारणा को व्यापक रूप में समझने में सहायक हैं।

(गनी एवं सिसोदिया, 2020) [27] भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के योगदान के बिना अधूरा माना जाएगा। भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में महिलाओं की भागीदारी 1817 में ही शुरू हो गई थी। भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैलकम के खिलाफ साहसपूर्वक संघर्ष किया और उन्हें छापामार युद्ध में पराजित किया। 19वीं शताब्दी में किन्नूर की रानी चेनम्मा, अवध की रानी बेगम हज़रत महल सहित कई महिलाओं ने ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध संघर्ष किया—और यह "1857 की पहली स्वतंत्रता संग्राम" से 30 वर्ष पूर्व की बात है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम (महान विद्रोह) में महिलाओं ने जो भूमिका निभाई, वह अत्यंत सराहनीय रही और स्वयं विद्रोह के नेताओं ने भी उनकी प्रशंसा की। रामगढ़ की रानी, रानी जिन्दन कौर, रानी टेस बाई, बायज़ा बाई, चौहान रानी, तपस्विनी महारानी जैसी वीरांगनाओं ने अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए युद्धभूमि में साहसिक भागीदारी निभाई। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने अद्भुत नेतृत्व और वीरता से सच्चे देशभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाली महिलाएँ केवल शिक्षित और उदार परिवारों से नहीं थीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों, सभी जातियों, धर्मों, समुदायों और समाज के हर वर्ग से थीं।

अनुसंधान अंतर

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय और स्वतंत्रता संग्राम पर व्यापक साहित्य उपलब्ध होने के बावजूद, स्वतंत्रता आंदोलन की सूक्ष्म वैचारिक विविधताओं और क्षेत्रीय गतिशीलताओं को समझने में महत्वपूर्ण शोध अंतर अभी भी मौजूद हैं। अधिकांश मौजूदा अध्ययन मुख्य रूप से प्रमुख नेताओं और घटनाओं पर केंद्रित होते हैं, जिससे जनसामान्य की भागीदारी, हाशिए पर रहने वाली आवाज़ें, और कम ज्ञात क्रांतिकारी प्रयासों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता। स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरण—प्रारंभिक प्रतिरोध, 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, और गांधीवादी युग पर अध्ययन तो हुए हैं, लेकिन वे अक्सर एक-दूसरे से अलग रहे हैं। इन चरणों को व्यापक सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों और स्वतंत्रता के बाद के भारत पर उनके दीर्घकालिक प्रभावों से जोड़कर समेकित विश्लेषण की कमी है। इसके अतिरिक्त, गांधीवादी अहिंसा और क्रांतिकारी विचारधाराओं की आलोचनात्मक तुलना तथा इनके आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक और सामाजिक ढाँचे पर संयुक्त प्रभाव का भी सीमित अध्ययन हुआ है। यह समीक्षा इन अंतरों को भरने के लिए वैचारिक संघर्षों और उनके स्थायी विरासत के बहुआयामी और समग्र मूल्यांकन का प्रयास करेगी।

अनुसंधान उद्देश्य

- भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का अध्ययन करना।
- स्वतंत्रता संग्राम और उसके प्रभावों का अध्ययन करना।
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के चरणों का अध्ययन करना (प्रारंभिक प्रतिरोध, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, गांधीवादी युग)।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग करता है, जिसमें पूर्व प्रकाशित साहित्य और अभिलेखीय दस्तावेज शामिल हैं। वर्ष 2014 से 2025 तक के शैक्षणिक कार्यों की समीक्षा करते हुए यह शोध भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों की वैचारिक विविधता, ऐतिहासिक संदर्भ, प्रेरणाएँ, सामूहिक प्रतिरोध और प्रभावों का विश्लेषण करता है। विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाकर, इसका उद्देश्य राष्ट्रीय संघर्ष और उसके भारतीय समाज तथा राजनीति पर दीर्घकालिक प्रभाव की समग्र समझ प्रदान करना है।

निष्कर्ष और परिणाम

यह लेख भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का बहुआयामी मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। इसमें महात्मा गांधी द्वारा स्वतंत्रता के लिए अपनाए गए एक अनूठे, नैतिक और अहिंसात्मक मार्ग की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है, जो भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से निहित था। स्वावलंबन और सविनय अवज्ञा के उनके आंदोलनों ने स्थायी प्रभाव छोड़ा, हालांकि उनकी रणनीतियों पर उठाए गए आलोचनात्मक प्रश्न उनकी समावेशिता और प्रभावशीलता को लेकर गंभीर बहसों को जन्म देते हैं। गांधी के अतिरिक्त, यह अध्ययन भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारी नेताओं पर भी प्रकाश डालता है, जिनके कट्टरपंथी दृष्टिकोण उपनिवेशवादी अन्याय के प्रति गहरे असंतोष को दर्शाते थे और समाजवाद, राष्ट्रवाद तथा साम्राज्य विरोधी विचारों को प्रेरित करते थे। भारतीय समाज की बहुलवादी और क्षेत्रीय विविधता ने स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में अनेक वैचारिक दृष्टिकोणों को जन्म दिया। फिर भी, यह अध्ययन यह स्वीकार करता है कि पूर्ण स्वतंत्रता—विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता—स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत में आंशिक रूप से ही पूरी हुई है। नए विचारधारात्मक ढांचे, विशेषकर वर्ग आधारित और दलित-बहुजन दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक समाज में असमानता और सामाजिक बहिष्कार से जूझते हुए स्वतंत्रता की वास्तविक सीमा पर महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं। अतः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को केवल उपनिवेशवाद के खिलाफ राजनीतिक संघर्ष के रूप में ही नहीं, बल्कि न्याय, समानता और समावेशी विकास की निरंतर खोज के रूप में समझना चाहिए। विभिन्न आंदोलनों और नेताओं की विरासत आज के सामाजिक-राजनीतिक विमर्श को प्रभावित करती रहती है, जो स्वतंत्रता के अधूरे आदर्शों के साथ नए सिरे से जुड़ाव की मांग करती है।

संदर्भ

1. M. M. Khan, "War of 1857: Achievements of Indians in their struggle against British," 2014.
2. Jaishree, "THE ROLE OF WOMEN IN INDIAN FREEDOM STRUGGLE (1857-1947)," *PARIPEX - INDIAN J. F Res.*, vol. 11, no. 9, 2022.
3. S. Basu and S. Sen, "Silenced voices: unravelling India's dissent crisis through historical and contemporary analysis of free speech and suppression," 2024. doi: 10.1080/13600834.2023.2249780.
4. R. M. Bhat and S. A. S. Kandasamy, "REVOLUTIONARY TRENDS IN INDIAN HISTORY: IDEOLOGICAL DIVERSITY AND COLLECTIVE RESISTANCE," *JOSS J. Soc. Sci.*, vol. 2, no. 7, 2023.
5. S. Schutte, "Politics or prejudice? Explaining individual-level hostilities in India's Hindu-Muslim conflict," *Int. Interact.*, vol. 45, no. 4, 2019.
6. P. Talwar, J. Doyle, and K. Mcdonagh, "Representing conflict: A study of the Indian Government's use of legitimisation and de-legitimisation in its internal security policy," 2016. [Online]. Available: <https://core.ac.uk/download/pdf/147608789.pdf>
7. Bhavya. P and Somashekar, "IMPORTANCE OF WOMEN IN FREEDOM STRUGGLE IN INDIA," *Inj. Interdisciplinary J. Humanit.*, vol. 2, no. 7, 2023.
8. B. CHANDRA, M. MUKHERJEE, A. MUKHERJEE, K. N. PANIKKAR, and S. MAHAJAN, "India's Struggle for Independence 1857-1947." doi: 10.2307/2759990.
9. A. Gokavi and A. Singh, "Analyzing The Hindi Print Media, Press And Freedom Struggle In India: An Analytical And Descriptive Nature," *Int. J. Creat. Res. Thoughts*, vol. 13, no. 3, 2025.
10. D. Sharma, "Revolutionary Movements in Modern India: Assessing Ideologies, Strategies, and Historical



- Significance,” *Int. J. Creat. Res. Thoughts*, vol. 2, no. 4, 2014.
11. K. Singh, “Democracy and its Institutions in India: A Legacy of Freedom Struggle,” *Int. J. Educ. Adm.*, vol. 8, no. 1, 2016.
 12. P. Acharya, “Press, Nationalism and India’s Freedom Struggle,” *ISSN 0970-8669 Odisha Rev.*, 2020.
 13. O. Shani, “India’s democracy before the democratic discontent, 1940s–1970s,” *Hist. Compass*, 2022.
 14. Y. Choedon, “India’s Engagement in Development and Peacebuilding Assistance in the Post-Conflict States: An Assessment,” 2021. doi: 10.3389/fpos.2021.637912.
 15. M. Tyagi and C. Sengupta, “Analyzing the Role of the Print Media in India’s Freedom Struggle: A Historical Narrative,” *Int. Rev. Soc. Sci. Humanit.*, vol. 9, no. 8, 2019.
 16. J. Atwal, “India and the World: Indian National Movement, Transnational Networks and Internationalism,” *Stud. Hist. (Sahibabad)*, vol. 40, no. 1, 2025.
 17. S. Annigeri, “The Role of Karnataka in the Freedom Struggle: A Historical Perspective,” *Int. J. Innov. Sci. Eng. Manag.*, vol. 1, no. 1, pp. 41–47, 2022, doi: 10.69968/ijsem.2022v1i141-47.
 18. Z. T. Rahman and R. J. Rahman, “An Analytical Study on Indian Freedom Movement and Nationalist Journalism,” *Int. Res. J. Manag. Sociol. Humanit.*, vol. 9, no. 8, 2018.
 19. P. Dhandia, “Reflection of the Freedom Struggle of India in Some Selected Novels of Eminent Personalities from Indian Context,” *Int. J. Multidiscip. Res.*, vol. 6, no. 6, 2024.
 20. J. BASU, “The Communists and the Indian Freedom Struggle,” *Marxist*, vol. 37, 2021.
 21. Abhinav, “Tracing the philosophical foundations and their role in Indian National Movement,” *IJNRD2301378 Int. J. Nov. Res. Dev.*, vol. 8, no. 1, 2023.
 22. B. Bhattacharya and S. K. Jat, “INDIAN INDEPENDENCE MOVEMENT BY ANTI-COLONIAL NATIONALIST AND POLITICAL ETHICIST NAMED MAHATMA GANDHI,” *TIJER - Int. Res. J.*, vol. 10, no. 6, 2023.
 23. P. Goyal, “Role of Indians in the Battle of 1857,” *Soc. Sci. J. Adv. Res.*, vol. 2, no. 2, 2022.
 24. J. V. Padvi, “Gandhi’s Ideological Based and Leadership in India’s Freedom Struggle: A Study,” *Int. J. Res.*, vol. 12, no. 3, 2025.
 25. S. Rani, “THE GREAT DIVIDE - NATIONAL MOVEMENT IN INDIA (PARTITION & INDEPENDENCE),” *Int. J. Creat. Res. Thoughts*, vol. 8, no. 5, 2020.
 26. P. Desai, “Nationalist Thought in Modern India: Exploration of the Idea of Freedom,” 2021. doi: 10.1177/0971685820943395.
 27. Z. R. Ganie and S. D. Sisodia, “The Unsung Heroines of India’s Freedom Struggle,” 2020. doi: 10.46281/aijssr.v5i2.515.